धुर इज़लास

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हज़रत मुहम्मद कहे आ गिआ तिन्न अस्सू, असल प्रभ दा हुक्म जणाईआ। हैरान हो के किहा मसीह यसू, ये अलफ़ तों बाहर तकाईआ । मूसा कहे की खेल दस्सू, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। तेई अवतार कहण किस दवारे वसू, गृह मन्दर इक्क सुहाईआ। गुर दस कहण केहड़ी रचना रचू, रचणहारा बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो दुलारे बच्चू, सभ नूं दिआं समझाईआ। बिन कदमां तों ब्रह्मण्ड खण्ड कच्छू, कशमकश वेखे जगत लोकाईआ। कुछ वास्ताा पाया राम अग्गे लच्छू, लछमण ध्यान लगाईआ। बलराम कृष्न नूं किहा कलिजुग किस बिध नट्ठू, सच देणा समझाईआ। मूसा कहे हाए सभ दी जड़ पट्ठू, पेड़ पुराणा रहण कोई ना पाईआ। ईसा कहे किसे नूं रहण नहीं देणा भाड़े दा टट्ठू, बोझ जगत ना कोई उठाईआ। मुहम्मद कहे केहड़ी दिशा नट्ठू, चौदां तबक ना कोई वडयाईआ। सतिगुर शब्द कहे सभ नूं भुआवे वांग लट्ठू, डोरी इक्को वार खिचाईआ। नानक किहा किस दे नाल हस्सू, हस्ती इक्क प्रगटाईआ। गोबिन्द किहा आपणी धार नाल वसू, बाकी करे सर्ब जुदाईआ। मुहम्मद किहा की कुछ खाऊ पीऊ छकू, शहनशाह धुरदरगाहीआ। ईसा कहे तोबा सभ दा बंनूं मक्कू, मुकम्मल हुक्म जणाईआ। मूसा कहे केहड़ा नाम रटू, रट्टा सर्ब चुकाईआ। तेई अवतार कहण सभ दीआं डोरां कट्ठू, खण्डा तेज़ धार चमकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सभ नूं आपणे खाने विच्च सट्ठू, सिर सके ना कोई उठाईआ। नानक किहा आपणी करनी तों कदे ना हटू, हटवाणे सारे लए खपाईआ। गोबिन्द किहा इक्क अमृत निराला झट्ठू, जाम अगम्मी दए पिआईआ। मुहम्मद किहा की हट्ट बाज़ारों वट्ठू, सभ दी कीमत चुकाईआ । ईसा किहा मैं ओस दे चरनां ढट्ठू , ढह के सीस निवाईआ। मूसा कहे दो जहान कोई ना बचू, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खिड़ खिड़ हस्सूं, हस्सती इक्को नज़र आवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ ।

मुहम्मद कहे मैनूं वखावण लग्गा कौण, बिन अक्खां अक्ख प्रगटाईआ। यसू कहे मैनूं ठोकरां नाल लग्गा हिलौण, सुत्तयां अक्ख खुल्ह़ाईआ। मूसा आखे चार कुण्ट लग्गा भवौण, दिशा रहण कोई ना पाईआ। तेई अवतार कहण सानूं लग्गा कुछ सुणौण, हुक्म धुरदरगाहीआ। नानक निरगुण कहे मैनूं लग्गा वखौण, दो जहानां जगत शाहीआ। गोबिन्द कहे मैनूं लग्गा बुलौण, इशारे नाल दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे बॅचिओ, नहीं तुहाढ्ढा सभ कुछ लग्गा मुकौण, मुकाबला रहण कोई ना पाईआ। ओधरों नेत्र रो पई पौण, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क प्रगटाईआ।

मुहम्मद कहे या मुबीन मेरे अल्ला, अल्लाह तेरी सरनाईआ। ईसा कहे क्यों कुरलावें इकल्ला, कलमे वाल्या दएं दुहाईआ। मूसा कहे भरावो मैनूं वी फड़ लैण दिउ पल्ला, भय मेरे अंदर आईआ। तेई अवतार कहण असीं छड्ड दिते जल थला, जंगलां विच्च ना कोई वडयाईआ। नानक निरगुण कहे तेरा होवे भला, तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मैं सन्मुख हो के खला, चरन ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे सारे कहो पुरख अकाल हो गिआ झल्ला, झलक सभ दी आपणे विच्च मिलाईआ। मुहम्मद कहे मैथों हुक्म नहीं जांदा ठल्ला, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। ईसा कहे मैं निक्का जिहा डला, रुढ़दिआं अग्गे ना कोई अटकाईआ। मूसा कहे किधरों बोल दित्ता हल्ला, हुक्म आपणा कटक चढ़ाईआ। तेई अवतार कहण साडा साह ना पैंदा विच्च खला, ख़बरे की की होर सुणाईआ। नानक कहे मेरा थल्लउँ घस्स गया तला, फिर फिर सेव कमाईआ। गोबिन्द कहे कुछ मेरा लेख होया जिस वेले मेल कीता डल्ला, लेखा लिखया बिन शाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सभ दे नाल कीता वल छला, नाम छुणछणे सभ दे हत्थ फड़ाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं केहन्दा मैं तेरा अल्ला, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। ईसा कहे मैं तैनूं आपणा आप बणा के घल्ला, घायल कर लोकाईआ। मूसा कहे मैं झलक नूर कीता झल्ला, सुध्ध रही ना राईआ। तेई अवतार कहण सानूं कच्छां मच्छां नूं पा के विच्च डल्लां, डण्डौत डण्डे नाल कराईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा बचन तुसीं सुणदे रहे बिनां कन्नां, क्यों कन्नां नाल जगत सुणाईआ। ओ नढ्ढयो बच्चयो धुर स्वामी नूं तुसां कर के अन्ह़ां, अक्खरां दी कीती चतराईआ। दीनां मज़्बां दा पा के बंन्ह़ा, बन्दगी विच्च बन्दे दिते रुलाईआ।

मुहम्मद कहे मेरे कुरान दा तीजा पंना, नावीं सतर सताह दए हिलाईआ। ईसा कहे मैं इक्क दिन तक्कया सी वल चन्ना, आपणी अक्ख उठाईआ। मेरा माही आया भन्ना, फड़ के कन्नों चारों कुण्ट दिता भुआईआ। मूसा कहे मैं नूर वेख्या विच्च तनां, मुट्ठी अक्खां उत्ते टिकाईआ। तेई अवतार कहण साडे अंदर वजाए टॅला, आवाज़ आपणी आप सुणाईआ। नानक कहे मेरा मनाया मन्ना, मानस दी जात दिती समझाईआ। गोबिन्द कहे मैं पढ़या नहीं मुकता कन्ना, सिहारी बिहारी ना ओट तकाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं सारयां नूं ला के विच्च तम्ह़ां, दीनां मज़्बां विच्च दिता अड़ाईआ।

मुहम्मद कहे मैनूं पै गिआ ग़मा, हाए की दिता सुणाईआ। ईसा कहे हुण की खेल होणा नवां, साडी चली ना कोई चतराईआ। मूसा कहे किस दी करनी होणी रवां, रवानगी साडे हत्थ फड़ाईआ। तेई अवतार कहण भरावो कोई वसाह नहीं जे दमां, दामनगीर जे पल्लू लए छुडाईआ। नानक निरगुण कहे एह ओसे दा कम्मा, जो आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे ना हरख़ सोग ना ग़मा, ख़ुशीआं सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाढ्ढा सरीर तुहाढ्ढी माता पिता जम्मा, नूर मेरा जहूर तुहाढ्ढे विच्च करे रुशनाईआ। तुहानूं दे के माटी चंमा, खाटां उत्ते दित्ता सवाईआ।

मुहम्मद कहे हाए मेरीए अंमां, अंमड़ी नज़र कोई ना आईआ। ईसा कहे किस दे कोलों मंगाँ, आपणी झोली डाहीआ। मूसा कहे मेरीआं थक्क गईआं टंगाँ, भज्जया वाहो दाहीआ। तेई अवतार कहण हुण केहड़ी वखाईए गंगा, गंगोतरी नज़र कोई ना आईआ। नानक निरगुण कहे ओसे दा खेल चंगा, जो ओसे रिहा भाईआ। गोबिन्द कहे जे सारी सृष्टी अंदर मचा दए दंगा, मेरी ख़ुशी बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल सदा बहु रंगा, भेव कोई ना पाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं बुढ्ढे नूं दे दिउ डण्डा, हौली हौली तुर के पन्ध मुकाईआ। ईसा कहे मैं टोह के वेख्या आ गिआ कन्ढ्ढा, किनारा अगला नज़री आईआ। मूसा कहे मैं सुण के हो गिआ ठंडा, बल रिहा ना राईआ। तेई अवतार कहण साडीआं खोह लईआं सभ वंडां, हिस्सा नज़र कोई ना आईआ। नानक कहे निरगुण हुण किसे नूं पूजण देणा नहीं करीरां जंडां, सीस अवर ना कोई निवाईआ। गोबिन्द कहे मैं छुडौणा लोहार तरखाण दा खण्डा, खण्डरां विच्च आपणा आप प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा खेल जोती नूर शैतानी विच्च बन्दा, गंदा सभ नूं रिहा कराईआ। मुहम्मद कहे मेरा सिर नंगा, गरमी रही सताईआ। ईसा कहे मैनूं हो लैण दे ठंडा, उह आबेहयात नज़र कोई ना आईआ। मूसा कहे बिरथा गिआ धन्दा, पिछली कीती रही ना राईआ। तेई अवतार कहण बौहड़ी कोई रहण नहीं दित्ता पंडा, बोध अगाध करे ना कोई पढ़ाईआ। नानक कहे सति पुरख दा सति धर्म दा वेखो झण्डा, इक्को नज़री आईआ। गोबिन्द कहे एह मेरा लेख मंगा, सभ नूं मिले वडयाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ दा खेल सदा दो रंगा, भेव अभेद ना किसे दृढ़ाईआ।

मुहम्मद कहे मैनूं किस किहा ग़ुलाम, नफर कर के रिहा बुलाईआ। ईसा कहे मैनूं कर लैण दे सलाम, आ गिआ धुरदरगाहीआ। मूसा कहे सज्जणो मैं होर सुणी कलाम, कलमा दिता बदलाईआ। तेई अवतार कहण फेर कौण जपूगा राम, रमता रमता सभ दी करे सफ़ाईआ। नानक निरगुण कहे एह ओसे दी शान महान, जो शहनशाह अखवाईआ। गोबिन्द कहे जिस ने छड्ड दिते तीर कमान, चिल्लयां हत्थ ना कोई लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो एह खेल श्री भगवान, दूजा नज़र कोई ना आईआ।

मुहम्मद कहे की वेला होया फ़जर, फ़ज़ल अल्ला रिहा कमाईआ। ईसा कहे मुहम्मदा रोंदी फिरदी अज़ल, रो रो कुरलाईआ। मूसा कहे नेड़े आ गई मुका के मज़ल, गज़ल

आपणी रही सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहण आपणा आपणा वेखो वज़न, कवण कवण भार उठाईआ। नानक कहे असीं सारे बणे रहे कज़न, कज़ा कोलों सरीर ना सके बचाईआ। गोबिन्द कहे मेरा ओस दे नाल परन, जो प्राणपत नज़री आईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो अग्गे वास्तो इक्को सारे कबूल करो सरन, सरन इक्को मंग मंगाईआ।

मुहम्मद कहे किस बिध छड्डां चौदां लोक, हाए हाए कर सुणाईआ। ईसा कहे काहनूं मंगी वीहवीं सदी बहुत, उन्नीसा पन्ध चुकाईआ। मूसा कहे मैं सोच ना सक्कया सोच, परवरदिगार की हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कहण असीं कढ़ु ना सके खोट, दीन दुनी साफ़ कराईआ। नानक निरगुण कहे एह प्रभ दे अगम्मी चोज, चोजी हो के आप कराईआ।

गोबिन्द कहे ना हरख कोई ना सोग, चिन्ता ग़म ना कोई रखवाईआ। सतिगुर कहे बच्चू तुहानूं सारयां नूं सृष्टी वाला भोगाया भोग, बच्या रहण कोई ना पाईआ। अग्गे पीहड़ी किसे चल्लण नहीं दित्ती दोहत पोत, बंसावली ना कोई अखवाईआ। तुहाढ़े वेख के विद्या वाले कोश, किछ आपणा हाल सुणाईआ। तत्तां वाला दे के तुहानूं पोश, पच्छिम दक्खण उतर पूरब दित्ता भवाईआ। ओदों तुहानूं औण नहीं दित्ती सोच, क्यों मज़्हबां विच्च फसाईआ। सचखण्ड दे आलूणे विच्चों कढ़ु के बोट, चोग जगत वाली चुगाईआ। अक्खरां वाला दस्स के जोग, माला मणकिआं वाली दृढ़ाईआ। नूर दे के आपणी जोत, चन्न कीता रुशनाईआ। इशारे दे के लोक परलोक, संदेसे दिते सुणाईआ। तुसां उहो समझिआ बहुत, आपणी खुशी बणाईआ। सानूं भण्डारा मिल्या अतोट, अतुट्ट दित्ता वरताईआ। एह तुहानूं छोटी जिही दिती सी मोख, मुख़तारनामा हत्थ ना किसे फड़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तुहाढ़े अंदरों भाण्डे लए पोच, मेहर निगह फिराईआ। दे के नेत्र इक्को लोच, अक्ख नाल मिलाईआ। कढ़ु के हरख़ सोग, सगल रमया दिता वखाईआ। तुहानूं जजमान बणा के परोहत, परौहणे जगत वखाईआ। साढे तिन्न करोड़ खोलू के सोत, सुत्यां शब्द शनवाईआ। उह फेर सभ नूं कर के फौत, फ़ैसला दिता कराईआ ।

मुहम्मद कहे ऐ खुदा की असीं वी मरे नाल मौत, मलकुल मौत दए सज़ाईआ। ईसा कहे की मैं फ़ासी चढ़या नाल शौक, सलीब गल लटकाईआ। मूसा कहे मेरी दिसे कोई ना पहुंच, अग्गा नज़र कोई ना आईआ। तेई अवतार कहण असीं सारे गए औंत, साडा बच्चा सीस ताज ना कोई टिकाईआ। नानक निरगुण कहे मैं प्रभ दी मन्न के धौंस, सिर लिआ झुकाईआ। गोबिन्द किहा मैं शब्दी धार जणा के रौंस, लेखा गिआ मुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं भेव ना दस्सया तुहाढ़े ख़ौंत, ख़तरे विच्च सर्ब रखवाईआ ।

मुहम्मद कहे मैं वेख्या इक्को चौंक, चौतरफी राह वखाईआ। ईसा कहे मेरे अंदर उठिआ शौक, आसा होर वखाईआ। मूसा कहे मैं डर गिआ किते वड्डिआई दा गल विच्च

पै ना जाए तौक, तक्ब्बर विच्च रखवाईआ। तेई अवतार कहण असां साफ़ सुथरा कर के रक्खया चौंत, कर कर थक्के सफाईआ। नानक निरगुण कहे मैं कर के इक्क मनौत, महिंमां इक्क सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं सभ दी वेखी अदौत, चार वरन अठारां बरन करन लड़ाईआ । सतिगुर शब्द कहे मैं सभ दा वड्डा गौंस, गहर गम्भीर अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म आप सुणाईआ।

मुहम्मद कहे मैनूं आ रिहा पसीना, पसू पंछी रहे कुरलाईआ। यसू कहे केहड़ा चढ़ गिआ महीना, वेखां नैण उठाईआ। मूसा कहे मैं केहड़ा अक्खर चीना, जिस पड़दा दिता चुकाईआ। तेई अवतार कहण सभ नूं होणा पिआ अद्धीना, चल्ली ना कोई वडयाईआ। नानक निरगुण कहे मैं निरमाणता विच्च कमीना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द कहे मैं इक्क दा हो अधीना, आहला अदना वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो मैं तुहाढ्ढी सभ दी वड्डी मशीना, पुरजे निक्के निक्के मातलोक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म रिहा समझाईआ।

मुहम्मद कहे मेरा अन्तर मंगे पनाह, मिले हक़ सरनाईआ। ईसा कहे मैं वी करदा हां, आपणा आप नाल मिलाईआ। मूसा कहे मैं वी मंगाँ उही थां, दर दवारा इक्को नज़री आईआ। तेई अवतार कहण असीं किस बिध करीए नांह, ज़ोर बल रिहा ना राईआ। नानक निरगुण कहे उहो पिता उहो मां, गोदी आपणी लए टिकाईआ। गोबिन्द कहे मैं अर्ज़ करां जिस ने हँस बणौणे कां, देवणहार माण वडयाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो फ़िकर ना करो ज़िकर ना करो मैं सभ दी पकड़ां बांह, तरस तुहाढ्ढे उत्ते कमाईआ । अग्गे लग्गण ना देवां कोई दाअ, पेचा शरअ कोई ना पाईआ। इक्को इक्क बण मलाह, बेड़ा जगत कंध उठाईआ । मेरा हुक्म होवण लग्गा रवां, खुशीआं विच्च विच्च वडयाईआ। ग़फ़लत विच्च कदे ना सवां, सृष्ट सबाई दिआं उठाईआ। जो जुग चौकड़ी लहणा कीता जमां, सभ दी झोली दिआं भराईआ। मैं कोई मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां दा करना नहीं तमां, तमाशा वेखां थाउँ थाईंआ। जिस तरां तुसीं कह के आए जिस ने गगन रहाया बिनां थम्मां, बिना तत्त शरीर तों आपणी खेल कराईआ। इक्को ढोला धुर दा गवां, संदेशा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ।

मुहम्मद कहे मेरा हत्थों लह गया छल्ला, उंगली खाली नज़री आईआ। ईसा कहे मेरा छुट गिआ पल्ला, पलक दा भेव रिहा ना राईआ। मूसा कहे मैं वी रहणा नहीं कल्ला, तुहाढ्ढा संग निभाईआ। तेई अवतार कहण जिस दवारिउँ साडा दीपक बला, अन्त ओसे विच्च समाईआ। नानक निरगुण कहे की माण माटी खला, ख़लक दा ख़ालक ख़ाली दए कराईआ। गोबिन्द कहे जो निरगुण धार हो के रला, आपणे विच्च मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे उस दे प्यार अंदर गुर अवतार पैगम्बर फला, पत्त टैहणी मात महकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

हज़रत मुहम्मद आह लै चिठ्ठी, बिन हलकारिउँ हत्थ फड़ाईआ । ईसा कहे ओ यार एह अनडिट्ठी, अग्गे नज़र कदे ना आईआ। मूसा कहे उह वड्डी किड्डी, मैनूं दिउ दृढ़ाईआ । तेई अवतार कहण साडी किध्धर जाऊ बिधी, मस्तक तिलक लगाईआ। नानक कहे एह धार सदा सिध्धी, सिद्ध आसण इक्क वखाईआ। गोबिन्द कहे हुण कोई ना बणिओ ज़िद्दी, सिर सके ना कोई उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे अग्गे हुक्म वरतणा इक्की, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। मुहम्मद दी आह दोहत्थड़ मार के पिट्टी, बौहड़ी दिता सुणाईआ। ईसा हत्थ रक्ख के गिच्ची, सीस लिआ झुकाईआ। मूसे किहा मैं तेरी धार निमाणी निक्की, नीकन नीक सरनाईआ । तेई अवतार कहण वेद व्यास औह वेख आपणी मिती, की वेला गिआ आईआ। नानक किहा साची दिसे कोई ना सिखी, चार वरन दुहाईआ। गोबिन्द कहे रसना रही किसे ना मिट्ठी, कड़वा रूप गई बदलाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहाढ्ढे हुन्दयां सारी सृष्टी गई भिट्टी, पुनीत नज़र कोई ना आईआ। मेरी जेब विच्च वेख लउ पिछली पुराणी चिठी, सैहज नाल समझाईआ। कबीर कहे कुछ सुण लउ जिस वेले मैं लुकिआ सां थल्ले खिती, कंडिआं विच्च दुहाईआ। तेग़ बहादर कहे मेरे सीस उत्ते लग्गी धार तिक्खी, आर पार समझाईआ। ईसा कहे जिस वेले मेरी सलीब खिच्ची, नाता तुट्टा होई जुदाईआ। राम कहे मैनूं तेरे नालों होई जिची, जंगलां विच्च भवाईआ। कृष्न कहे मैं जगत सलाह दिती, कौरो पांडो दिते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ।

मुहम्मद कहे मैं खोल्ह के वेख्या पत्रा, बिन अक्खां अक्ख फिराईआ। ईसा कहे मैनूं नज़री आया ख़तरा, ख़त ख़तूतां विच्च दिता समझाईआ। मूसा कहे मैं किथ्थे रहवां वक्खरा, घर नज़र कोई ना आईआ। तेई अवतार कहण हुण केहड़ीआं पढ़ावांगे सतरां, जगत विच्च शनवाईआ। नानक कहे केहड़े वसीए वतना, दवारा कवण सुहाईआ। गोबिन्द कहे हुण आ गए ओस दे पत्तणा, जो तट्ट किनारा इक्क रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे बॅचिओ सभ नूं कर के सख्खणा, सुखीं सांदी प्रभ दे चरन टिकाईआ। चारों कुण्ट अंगिआरा भक्खणा, सर्बभक्खी देवे मिटाईआ। तुसां अग्गे मूल ना तक्कणा, सत धार दा डण्डा रिहा चमकाईआ। किसे मन्दर मस्जिद शिवदवाले मद्ध गुरूदवार भोग ला कोई ना चखणा, सभ नूं मन्ना दित्ता कराईआ । भय विच्च पुरख अकाल दी चरनी वस्सणा, सौं के झट लंघाईआ। वेखयो कोई किते ना करयो यतना, यथार्थ दिता दृढ़ाईआ। हुण मैं कोई वसणा नहीं पौंटा पटणा, पट्टीआं वाली करनी ना कोई सफ़ाईआ। सभ दा लेखा पत्ता कट्टणा, हुक्म दा कटक देणा चढ़ाईआ। इक्क वार प्रभ दी चरन धूढ़ दा ला लउ वटणा, एह अन्त दी तुहाढ्ढी कुड़माईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं इक्को ख़सम पऊगा रक्खणा, देवर जेठ नज़र कोई ना आईआ। उस दे चरनां अग्गे पऊगा टप्पणा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चरन धूड़ पएगा फक्कणा, तृष्ना तृप्त कराईआ । वेखयो दूजे हुक्म तक्क किसे नहीं अक्कणा, जुगाँ दा राह ना कोई तकाईआ।

मुहम्मद कहे ईसा हुण किस तर्रां बचणा, मूसा की तेरी सलाहीआ। तेई अवतार

कहण ओ भरावो एसे दा नां पैणा जपणा, अल्ला राम एहो नज़री आईआ। नानक कहे चंगा इक्को दे घर वस्सणा, दूजा ख़स्म ना कोई हंढाईआ। गोबिन्द कहे मैं साची सेजे सौणों कदे नहीं हट्टणा, गल्ल इक्को लैणा लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे की फेर जा के नाम जपाओगे नाल रसना, तन वजूद हंढाईआ।

मुहम्मद कहे मैं हुणे चौहन्दा नस्सणा, छड्डां ख़लक खुदाईआ। ईसा कहे की एहो जिही होण वाली घटना, मैनूं दे समझाईआ। मूसा कहे इस ने सारयां नूं फट्टणा, निराला तीर चलाईआ। तेई अवतार कहण एसे राम दी सरन सभ ने ढठ्ठणा, ढहि ढहि सीस निवाईआ। नानक कहे भरावो चन्द दिहाढ़े रैण वसेरा कट्टणा, लोकमात दुहाईआ। गोबिन्द कहे मैं फेर नहीं जम्मणा विच्च पटना, नूर इक्को इक्क चमकाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुहाढ्ढा वस नहीं तुहाढ्ढा कोई यत्ना, ताकत नज़र कोई ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ मैं तुहानूं रक्खणा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सैहज सैहज समझाईआ।

मुहम्मद कहे उह अंदर वज्जी हुक्क, हुक्म दित्ता दृढ़ाईआ। ईसा कहे किते साडा पैंडा ते नहीं गिआ मुक्क, मूसे उठ ध्यान लगाईआ। तेई अवतार कहण किधरों सुण लई तुक्क, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। नानक कहे सभ दी सफ़ा गई उठ, ऊठत बैठत रही ना राईआ। गोबिन्द कहे मुहम्मदा यार क्यों कटाई सी मुच्छ, मैनूं दे समझाईआ। स्त्री पिच्छे हो के कुच्च, शकल लई बदलाईआ। गोबिन्द, सारयां दे हुन्दआं ना पुच्छ, कल्ला देउँ समझाईआ । सतिगुर शब्द कहे मैं कलमयां दा मालक क्यों करदे बुच्च बुच्च, जिस तऱ्हा मैं चाहिआ ओस तऱ्हां दिता रगढ़ाईआ। पता नहीं किस ज़मीन उत्ते आकड़ नाल फिरदे सो टुप्प टुप्प, टोभे ला ला कीती लिखाईआ। जिस ने तुहाढ्ढा बूटा लाया ओसे ने दिता पुट्ट, क्यों रो रो मारो धाहींआ। शुकर करो तुहाढ्ढा खैहड़ा गिआ छुट्ट, आपणी दे ना सके सफ़ाईआ । मेरा कासा ख़ाली ठुठ, विच्चों ठुमरी नज़र कोई ना आईआ ।

राम किहा ओ अजे वी हो जाओ इक्क मुट्ठ, भुल्ले घर नूं जावो आईआ। नानक किहा भई एह सभ हत्थ ओसे दे कुच्छ, जिउँ भावे तिउँ रिहा चलाईआ। गोबिन्द कहे बड़ी छेती सारयां दा पैंडा गिआ मुक्क, भरावो साडीआं मुक्कीआं घसुँना साडा लेखा दिता मुकाईआ। जे इस दे कोलों पुछ लैंदे एसे दी तुक, क्यों दीनां मज़ूबां वाली हुंदी लड़ाईआ। असीं खुश रहे सानूं बणा के पुत्त, हिस्से दित्ते वंडाईआ। ते जिस वेले आधां बिआधां मुणिआदां दा पैंडा गिआ मुक्क, पटेदारी रही ना राईआ। जे कदे मातलोक जाण तों पहलों ऐथे कर लैंदे ठुक, सलाह मशवरा इक्क पकाईआ। फिर झगढ़ा ना पौंदे काया बुत्त, मनुश मनुशां नाल टकराईआ । कृष्न कहे मूसा तूं जा के पाई पहलों फुट, मूसा कहे मेरे नालों बहुती ईसा अग्ग लगाईआ । ईसा कहे मैं कुछ हो गिआ चुप्प, मुहम्मद ने चार कुण्ट दिती दुहाईआ । राम कृष्न नूं लवो चुक्क, पत्थर पत्थरां नाल टकराईआ। अवतार कहण किस बिध पाई ओस ने फुट्ट, सानूं सभ कुछ जाणदिआं नूं दिता लड़ाईआ। नानक किहा आपणी

करनी नूं टुक्क टुक्क, साडी झोली दिती भराईआ। गोबिन्द किहा सभ नूं ओस ख़ाने विच्च दित्ता सुट्ट, जिथ्थे सोटा सत रंगा डराईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं नहीं सी पता मैं आदि दा इक्को उहदा पुत्त, तुसीं मेरे विच्चों जम्म के जगत खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ।

मुहम्मद कहे सदी चौधवीं पै गईआं चीसां, अल्लाह तेरी सरनाईआ। ईसा कहे किते भुल्ल नहीं गईआं हदीसां, हज़रतां दे दृढ़ाईआ। मूसा कहे आपणा वेख ख़ाली हो गिआ खीसा, की दूजिआं रिहा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कट्ठे वेखण किते आ नहीं गिआ बीसा, बिस्तरे सभ दे गोल कराईआ। नानक किहा आपणा आपणा वेखो शीशा, पड़दा उहला रहे ना राईआ। गोबिन्द किहा तुहाढ्ढीआं पूरीआं करन लग्गा उम्मीदां, आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सभ दीआं परखण आया नीतां, नीतीवान वेस वटाईआ। की फेर वड़ोगे मन्दरां मसीतां, मसल्ले हत्थां विच्च उठाईआ। सारे कहो साडीआं लग्गीआं इक्क दे नाल प्रीतां, प्रीतम लिआ मनाईआ। पिछला याद ना करयो वेला बीता, माज़ी राह ना कोई तकाईआ। सारे गाओ इक्को गीता, जो गहर गम्भीर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मुहम्मद कहे मैनूं होण लग्गी दर्द, दरे दरबार सुणाईआ। ईसा कहे किते कढ्ढ ते नहीं लई फ़रद, साडा लेखा वेख वखाईआ। मूसा कहे मैं वेख होया असचरज, अचरज खेल खिलाईआ। तेई अवतार कहण ना नारी ना एह मरद, जोती जामा नूर रुशनाईआ। नानक गोबिन्द कहे एह पूरा करन आया फ़र्ज़, आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाढ्ढे हुन्दआं माणसां खाधे करग, जूनीआं विच्च सज़ाईआ। मैं बोल के कहवां गरज, तुहाढ्ढी कीती अग्गे देणी बदलाईआ। रहण नहीं देणा अन्धेरा गर्द, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। एकंकारा आया परत, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। सभ दा लेखा कीता तरक, तुरत आपणा हुक्म चलाईआ। पूरी कर के इकरारां दी शर्त, शरअ देवे बदलाईआ। तुसां कदी वेख्या स्वर्ग नरक, जा के फेरा पाईआ। हुण किसे नूं वड़न नहीं देणा विच्च चरच, चरागाहां विच्च भवाईआ। वेखयो फेर ना जायो उत्ते फर्श अर्श मेरे विच्च समाईआ। किते वंड ना वंडिओ गरबन शरक, शमालन जनूबन आपणा फेरा पाईआ। अग्गे रहण नहीं देणा कोई फ़रक, फ़िकरा इक्को देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाईआ।

मुहम्मद कहे क्यों होई दिलगीरी, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। ईसा कहे टुट्टण लग्गी शरअ ज़ंजीरी, टुट्टी गंढ ना कोई पवाईआ। मूसा कहे बस्स होई फ़कीरी, फ़ातिआ सभ दा रिहा पढ़ाईआ। तेई अवतार कहण रहणा नहीं बग़लगीरी, जगत संग बणाईआ। नानक गोबिन्द कहे एह वक्त अख़ीरी, आख़र रिहा सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस सृष्ट कीती ताअमीरी, उहो वेख वखाईआ। लहणा देणा चुकावे हस्त कीड़ी, लक्ख चुरासी

वेख वखाईआ। सभ नूं गली लँघणा पैणा भीड़ी, सौखा राह ना कोई जणाईआ। सिर ताज ना रहे अमीरी, अमरापद ना किसे वखाईआ। एह खेल होणा तकदीरी, शास्त्र वेद समझे कोई ना राईआ। कुछ लहणा बदरे मुनीरी, बैतुल धाम सरनाईआ। कुछ हुक्म शब्द नाइब वज़ीरी, नातवां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क उपजाईआ।

मुहम्मद कहे क्यों उम्मत दा भज्जण लग्गा हुक्का, चिलम चिमटा कम्म किसे ना आईआ। ईसा कहे सभ दे मुख विच्च पैणा थुक्का, थोक दा माल सारे बैठे लुटाईआ। मूसा कहे मैं किस किस दा भार चुक्कां, साबत नज़र कोई ना आईआ। तेई अवतार कहण साडा मार्ग मुढ्ढों घुथ्था, प्रभ दा नाम इक्क समझाईआ। आदि शक्त कहे मैनूं वी रो लैण दिउ विच्च मार के भुबबा, खुल्ली मींढी सीस ना कोई गुंदाईआ। नानक कहे आपणी करनी सभ दा बेड़ा डुब्बा, दूसर करे ना कोई सफ़ाईआ। गोबिन्द कहे लेखा अन्त अख़ीरी मुक्का, चार कुण्ट ना कोई सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों लैंदे रहे मेरे नाम दा भुग्गा, भोग लवा के आपे लैंदे खाईआ। एसे कर के उजड़न लग्गा झुँगा, गुरू दा हिसा सिख आपणयां ढिंडां विच्च टिकाईआ। तुसीं कदी ना समझिओ पुरख अकाल बुढ्ढा, जुग जुग सभ दा पिता माईआ। ना लंगढ़ा लूल्ला डुड्डा, ना नैणहीण अखवाईआ। जे तुसीं सभ दी साफ़ रक्खदे बुद्धा, कूड़ी क्रिया ना कोई कमाईआ। मैनूं दस्सो क्यों तुहाथों करौंदा रिहा युद्दा, धर्म दे नाल धर्म दी लड़ाईआ। मेरा खेल किसे ना बुज्झा, बेनन्ती चरन ना कोई कराईआ। जैसा हुक्म दिता तैसा गुर अवतार पैगम्बर मात रुज्झा, जगत विच्च सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मुहम्मद कहे मेरे अंदर आवाज़ आई हू, अल्लाह हक़ रिहा जणाईआ। ईसा कहे मैनूं पैंदी धूह, बौहड़ी कुरलाईआ। मूसा कहे मैनूं साफ़ कर लैण दे मूंह, जो पत्थरां उत्ते रगढ़ाईआ। तेई अवतार कहण असीं रस्ता साफ़ ना कीता रूह, मन दी चलदी रही चतुराईआ। नानक गोबिन्द कहे सारे खेल वेखो लूं लूं, रोम रोम रोम समाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुहानूं नहीं पता मैं सभ दा इक्को गुरू, सतिगुर मैनूं कह के सारे तुसीं गाईआ। मेरा प्यार दा वड्डा खूह, जिस विच्च सारे ग़ोते खा खा मेरी ओट तकाईआ। कोई दस्सो हुण अग्गे किस बिध खेल होणा शुरु, शहनशाह आप कराईआ। किस धार आत्मा जुड़ू, मिले माण वडयाईआ। मुहम्मद कहे हुण फोका करना कुड़ूं कुड़ूं, कुड़त्तण मज़हब रहे ना राईआ। आपणी करनी तों कदे ना मुड़ू, ईसा रिहा सुणाईआ। मूसा कहे मैं हुक्मे अंदर तुरु, तुरत सीस निवाईआ। तेई अवतार कहण एसे दा मंतर फुरूं, फुरने बन्द कराईआ। नानक गोबिन्द कहे एका सरन सरनाई पड़ूं, पढ़न लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं सभ दे अंदर वड़ूं, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। शाह सुलतानां फड़ूं, फड़ के दिआं उठाईआ। दो धारी हो के लड़ूं, लकीर फ़कीर वाली वखाईआ। सभ दे अंदर हिको धौल जड़ूं, धरत धवल दिआं हिलाईआ। समुंद सागर

छड़ूं, विरोल वखावां थाउँ थाईंआ। जिहड़ा लेख लिखाया गोबिन्द धार परार परूं, पारब्रह्म हुक्म सुणाईआ। ओसे तरां करूं, करतब आपणे हत्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म संदेशा इक्क सुणाईआ।

मुहम्मद कहे क्यों होण लग्गी पीड़, पीड़ी नज़र कोई ना आईआ। ईसा कहे जगत नबीआं दी लग्ग गई भीड़, भीड़ा राह कोई ना पार कराईआ। मूसा कहे झगढ़ा मुकिआ ना हसत कीड़, साचा रंग ना कोई रंगाईआ। तेई अवतार कहण रोंदे शाह हकीर, फ़कीर देण दुहाईआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभ बदल रिहा तदबीर, तकदीर तहिरीर नाल वडयाईआ । जिहड़ी आसा रक्खी कबीर, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। सो खेल करे शाह हकीर, हुक्म इक्क वरताईआ। सभ दी वेखणहारा ज़मीर, अंदरे अंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला आप चुकाईआ।

मुहम्मद कहे की हुक्म देवे खुदा, खुद आपणा आप सुणाईआ। ईसा कहे होवे ना कदे जुदा, पल्लू आपणा लए छुडाईआ। मूसा कहे मुशकल विच्च हो के फिदा, आप आपणा भेट कराईआ। तेई अवतार कहण जुग बदलणा एहदी अदा, अदालत अदल आप कमाईआ । नानक कहे सभ नूं देवणहार सज़ा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं औण लग्गा मज़ा, मज़ाक मेटे कूड़ लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे किसे नूं जणाई नहीं आपणी रज़ा, राज़क रिज़क रहीम आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं मेरे छोटे छोटे अज़ा, हिस्से जगत दिते वंडाईआ। तुहानूं नाम दी दे के ग़िज़ा, सूरबीर दित्ता बणाईआ। तुसीं दे के बांग अज़ां, ऊँची कूक दित्ता सुणाईआ। मैं सभ दा लेखा कर के लौंदा रिहा मीज़ान, हिसाब आपणे हत्थ रखाईआ। सारे मेरे दवारे जमां करा दिउ अज्जील कुरान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मन्नो इक्क ईमान, चरन कँवल सरनाईआ। सुणो मेरा पैग़ाम, सभ नूं रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं लैण नहीं देणा आराम, हुक्मे अंदर भवाईआ। मुहम्मदी होण हैरान, कौण रिहा उठाईआ। ईसा बणौणा निशान, निशाने सर्ब चुकाईआ। दोहां दा होणा जंग घमसान, घुमम्ण घेर विच्च लोकाईआ। मेरा शब्दी फिरदा रहे बबाण, बेवा वेखे थाउँ थाईंआ। धुर फ़रमाणे दा चढ़े तुफ़ान, चारों कुण्ट दए हिलाईआ। नाम दा चढ़े चिल्ला कमान, कमान करन वाला रहण कोई ना पाईआ। वेखयो गुर अवतार पैगम्बरो होइओ ना परेशान, परासचित मोहे लागे कोई ना राईआ। मेरा इक्को सूरबीर शब्द सुत जवान, जवानी सभ दी दए गवाईआ। मुहम्मद अग्गों कहे सलाम, कदमबोशी कर के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किस नूं देवें इनाम, शाबाश कह सुणाईआ। कवण होए परवान, दर मिले वडयाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिन्नां भगतां मिले भगवान, ओन्नां वज्जे वधाईआ। बाकी सृष्टी दा लेखा पीण खाण, जन्म कर्म ना कोई कटाईआ। प्रभ दा रूप आदि जुगादि महान, महिंमां कोई कथ सके ना राईआ। जोत दी धार विच्च तत्त इन्सान, निशान आपणा आप वखाईआ। सभ नूं हुक्म करना पए परवान, शिव पारबती बैठा उंगली लाईआ। ब्रह्मा सुरसती कर ध्यान, नैण अक्ख खुल्हाईआ। विष्नूं लछमी धूढ़ी कर इशनान, धुर दा रंग चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ।

सभ दी करनहारा कल्याण, कायनात फोल फुलाईआ। मेरा हुक्म दो जहानां तों तिक्खी किरपान, किरपा विच्च कूड़ कपट सभ दा बाहर कढ्ढाईआ। जगत जगत दा महिमान, दिन थोड़े नज़री आईआ । अस्सू कहे मेरे असव वाले माही दी आपे आ जाऊ सभ नूं पहचान, पुच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहण कुझ सानूं दे दे वरदान, वारस बण जा आपणी जगत लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे कुछ अगला सुणो फ़रमाण, सैहजे रिहा सुणाईआ। अल्ला वालिओ मक्के मदीने मारो ध्यान, काअबे नूं कबरां रिहा वखाईआ। अवतारो तीर्थ तट्टां वेखो निशान, शमशान भूमी सभ नूं नज़री आईआ। कट्ठे हो के वेखो कौण श्री भगवान, कवण खेल कराईआ। किस दी मन्नदे आण, किस नूं सीस झुकाईआ। सारे कहण क्यों देवे फ़रमाण, आपणा हुक्म बदलाईआ। गोबिन्द कहे सारयां दा वक्त पहुंचिआ आण, पंजे ला के आपणा पल्ला लउ छुडाईआ। शुकर करो जे छुट्ट जावे तुहाथों जहान, छुट्टी लै के आपणे घर जा के आपणा पती लउ मनाईआ। तुहाढ्ढी लाह देवे थकान, वाड़ के सचखण्ड मकान, वखा के धुर दा इक्क निशान, अमाम इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच रिहा समझाईआ।

मुहम्मद कहे फेर वेख लईए मार के झाकी, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। ईसा कहे कोई साबत रिहा ना तन ख़ाकी, वजूद अंदर वसल यार ना कोई कमाईआ। मूसा कहे खेल करौणा इतफाकी, झट पट रूप लिआ बदलाईआ। तेई अवतार कहण हुण कट्ठे हो जाईए साथी, सगला संग बणाईआ। नानक गोबिन्द कहे सभ तों तारे गए ना पापी, अपराधां भरी लोकाईआ। जो साडे पाठ दे बणदे रहे जापी, जप जप कुकर्म कमाईआ। पढ़िआं सुणयां मुक्की किसे ना वाटी, अंदर वड़ ना दरस दिखाईआ। एसे करके सदी चौधवीं मिले किसे ना थापी, पुशत हत्थ ना कोई टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे आह वेख लउ मेरे कोल तुहाढ्ढी निक्की जिही कापी, हिसाब अंदरला दए वखाईआ। क्यों ना झगढ़ा मुक्कया ज़ात पाती, पत्रका पढ़ के पत्रयां नाल लड़ाईआ । जेहड़ी साजणा जगत साज विच्च थापी, थपक थपक सुणाईआ। ओसे दा खेल वेख लउ आपी, घर आपणे अक्ख खुल्ह़ाईआ । गुर अवतार पैगम्बर कहण असीं सुनेहड़े वाली चिठी वाची, वाचक हो के अग्गे दिता सुणाईआ। खेल खेलदे रहे काया माटी काची, तत्तां विच्च समाईआ। गोबिन्द कहे याद कर लउ माछूवाड़े दी राती, रता फ़रक रहे ना राईआ। जिस वेले मेरा कोई रिहा नहीं सी साथी, बच्चे प्रभ दी गोद सवाईआ। ओस बात अगम्मी आखी, संदेशा इक्क सुणाईआ। गोबिन्द बिना तेरे मेरे दो जहानां करे कोई ना राखी, हाकरां मारन वाले सारे देणे हटाईआ। मंज़ल इक्को दस्स के वाटी, वाअदा सभ दा पूर कराईआ। जन भगतां सीना ठांडा कर के छाती, शहनशाह आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां खेल वखाईआ ।

मुहम्मद कहे मेरे अग्गे औंदे जांदे शाही वाले हरफ़, शहनशाही कौण बदलाईआ। ईसा कहे जिस दा हुक्म होणा चौतरफ़, चारों कुण्ट दुहाईआ । मूसा कहे जिस ने सेव

कमाई हेमकुण्ट विच्च बरफ़, आपणा ध्यान लगाईआ। ओस दी पूरी करनी शर्त, शरअ देवे बदलाईआ । निरगुण हो के आया परत, पतिपरमेशवर नूर खुदाईआ। मुस्लम ईसाई रहे तड़प, मूसा अगनी विच्च चमकाईआ। हुक्मे अंदर होण वाली झड़प, झगड़े विच्च लड़ाईआ। अवतार कहण धुर दा हुक्म बड़ा अड़ब, मन्नण विच्च कदे ना आईआ। नानक गोबिन्द कहे साडा इशारा देस दड़प, हुक्मे हुक्म वरताईआ। सभ दी पूरी होवे लिखत पढ़त, बाकी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खिलाईआ।

मुहम्मद कहे किथ्थे रही चार यारी, अग्गे पिच्छे ध्यान लगाईआ । ईसा कहे छड्डणी पई सिकदारी, उज़र रिहा ना राईआ। मूसा कहे सच खुदा दी आई वारी, वारस हो के वेख वखाईआ । तेई अवतार कहण साडी जगत होई बेइतबारी, भरोसा रहण कोई ना पाईआ। नानक कहे माया ममता करी खुआरी, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। गोबिन्द कहे पशू पंछीआं दे सारे बण गए शिकारी, साचा तीर निशाना ना कोई लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो जुग चौकड़ी तुसीं हुक्म दे वगारी, जोत निरँकारी कर के गए रुशनाईआ। हुण तुहाढ्ढी चुक्की वारी, प्रभ दी इक्क चले सिकदारी, सभ नूं दस्से वफ़ादारी, दीनां मज़बां कर खुआरी, टिल्ले परबत वेख पहाड़ी, जूहां जंगलां रिहा साड़ी, मूसा कहे किते उजड़ ना जाए हाढ़ा, हाढ़ा कढ्ढ के दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं करे खबरदारी, खबर खबर खबर खवाबां विच्च सुणाईआ।

(३ अस्सू शै सं ३ हरि भगत दवार जेठूवाल)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

सम्मत पंज कहे सो पुरख निरँजण सुहौणा तख्त, हरि पुरख निरँजण दया कमाईआ। एकंकार हुक्म देणा सख्त, आदि निरँजण आप मनाईआ। श्री भगवान खेल करना उप्पर अर्श, अबिनाशी करता धार बंधाईआ। पारब्रह्म वेखणा वक्त, वेला दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दा दवारा इक्क वखाईआ ।

सम्मत पंज कहे सवाधान होणा शब्दी शब्द एक, शब्द शब्द वडयाईआ। साचे दर दी इक्क टेक, इक्को ओट बणाईआ। इक्को रूप इक्को पेख, इक्को करनी कार कमाईआ। इक्को हुक्म इक्क संदेश, इक्को कलमा नाम पढ़ाईआ। इक्को बण नर नरेश, हुक्म इक्को इक्क सुणाईआ । इक्को दे होणा सभ ने पेश, पेशीनगोई दए जणाईआ। जो सतिगुर शब्द रहे हमेश, आदि अन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ।

सम्मत पंज कहे शब्द गुरू होणा सवाधान, सचखण्ड साचे लए अंगढ़ाईआ। आपणी करनी मार ध्यान, आप आपा वेख वखाईआ। संदेशा सुण श्री भगवान, हुक्म मन्ने चाईं चाईंआ। किस बिध खेल करना जहान, लोकमात कार कमाईआ। तख्त निवासी हो नौजवान, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। करना खेल मालक कुल जहान, ख़ालक ख़लक आप दृढ़ाईआ। जिस दी करे ना कोई पहचान, बेपहचान नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मेरा साहिब सच्चा दरबारी, आदि जुगादी इक्क अखवाईआ। जिस दी धार दो जहानां न्यारी, निरगुण आपणी कार कमाईआ। अवतार पैगम्बर गुर जिस दे पुजारी, जुग जुग सीस झुकाईआ। सारे आसा रक्ख के गए वारो वारी, भविख्तां विच्च जणाईआ। कल कलकी होए अवतारी, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारी, इक्क इकल्ला डेरा लाईआ। अन्त ओस दी आ गई वारी, वारस होवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जग होणा वक्त सुहंजजणा, सोभावन्त सुहाईआ। करे खेल दर्द दुःख भय भंजना, प्रभ ठाकर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बण के सज्जणा, सगली कार कमाईआ। जिस दा अगम्मी दरबार लग्गणा, जुग चौकड़ी वंड ना कोई वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव धुर दे हुक्म सद्दणा, संदेशा इक्क जणाईआ। तेई अवतार उठ उठ भज्जणा, बण बण पान्धी राहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद सरनी लग्गणा, निउँ निउँ लागण पाईंआ। नानक गोबिन्द खेल वेखणा सूरे सर्बग्गणा, जोती जाता जोत करे रुशनाईआ। नाम दमामा एका वज्जणा, ब्रह्मण्ड खण्ड दए उठाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआरा दगणा, चारों कुण्ट तत्त जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे विष्नूं करनी सच त्यारी, त्रैगुण अतीता दए जणाईआ। क्यों सृष्टी होए खुआरी, ग़रीब निमाणे देण दुहाईआ। क्यों ना बणया जगत अधारी, तृष्ना भुक्ख गवाईआ। अन्तम वेख खेल अपारी, अपरंपर स्वामी दए जणाईआ। ओस दी आई वारी, जिस दी वारता सारे गए गाईआ। जिस आपणी कल धारी, कल राखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मे चल वेख पारब्रह्म, ब्रह्म वेते दिआं जणाईआ। जिस दी धारों तेरा होया जरम, जन्म दिता ख़लक लोकाईआ। अग्गे कोई ना रहे भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। इक्क ब्रह्म क्यों बणे वरन, बरन क्यों रंग रंगाईआ। क्यों नहीं प्रभ दे पूजे सभ ने चरन, इष्ट इक्क ना कोई रखवाईआ। क्यों ना मंज़ल साची चढ़न, पैंडा पन्ध ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ।

सतिगुर शब्द कहे उठ शंकर भोले नाथ, सच दिआं जणाईआ। छड्डु दे खैहड़ा कैलाश, परबत सारे देण दुहाईआ। कूड़ कुड़िआरयां खाली होई लाश, तन वजूद ना माटी ख़ाक रुलाईआ। क्यों माया ममता खेड़ा होया अबाद, चारो कुण्ट जूठ लहराईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बर होए आज़ाद, एका इष्ट ना कोई मनाईआ। क्यों तन भबूती लाई ख़ाक, बाशक तशका गल लटकाईआ। क्यों बन्द कवाड़ी खुल्हिआ किसे ना ताक, शम्भू तेरा नाम धिआईआ। उठ वेख आपणा भविख्त वाक, जो ब्रह्मे नाल दित्ता समझाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों सतारां हाढ़ दी आउणी उह रात, रुतड़ी इक्क महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे तेई अवतार होणा सवाधान, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ । लोकमात सभ ने धरना ध्यान, दूसर राह ना कोई तकाईआ। साचे प्रभ दा नूर वेखणा महान, महिंमा अकथ्थ कथ दृढ़ाईआ। जिस बणाए कृष्न राम, काहना बंसरीआं धुन सुणाईआ। सो खेल करे विच्च जहान, जोती जाता वेस वटाईआ। हुक्म संदेशा देवे फ़रमाण, कलमा इक्को इक्क पढ़ाईआ। जा के सारे करो परवान, अग्गे हुक्म ना कोई सुणाईआ। बरदे बणो गुलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पिछला लेखा छड्डो तमाम, तमन्ना अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे सुणो पैगम्बर हज़रत, हज़ूर हाज़र रिहा जणाईआ। जिस दी रहमत नाल कीता ऐशो इशर्त, रस कलमे वाला खाईआ। जीवण ज़िंदगी कीती बसरत, लोकमात मिली वडयाईआ। दीनां मज़्बां नाल कीती कसरत, बल बल विच्चों प्रगटाईआ। हुण क्यों होई लोकमात नफरत, नेत्र अक्ख ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बरो वेखो धुर इजलास, हरि करता आप लगाईआ। हुक्म संदेशा सुणना ख़ास, ख़सूसीअत नाल दृढ़ाईआ। जिस दे उत्ते तुहानूं विश्वास, विशा पिछला दए मुकाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। तुहानूं दीन मज़्ब दी छड्डणी पए जमात, कलमा कायनात ना कोई सुणाईआ। सच दवारे होणा पैणा दासी दास, सेवक सेवक रूप वरवाईआ। ज़रा निगाह मारो उप्पर आकाश, आकाशां खोज खुजाईआ । फेर धरनी तक्को जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोती जाता नज़री आईआ। जो सभ दी सुणे बात, बातन भेव खुल्हाईआ। दर्शन देवे साख्यात, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा आप जणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे गुरू दस करो त्यारी, तरां तरां वडयाईआ। खेल वेखणा जोत निरँकारी, निरवैर निराकार आप कराईआ। अन्तम आई जिस दी वारी, वारस होए

सर्ब लोकाईआ। आपणी कला वरतो ज़ाहरी, परदा उहला दिउ उठाईआ। जिस नूं ग्रन्थां शास्त्रां वेदां पुराणां अञ्जीलां कुरानां विच्च तुसां कीता इशतिहारी, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। उह शहनशाह बण सिकदारी, लोकमात फेरा पाईआ। जिस दी सभ ने मन्नणी ताबिआदारी, तब्बा तबीअत दए बदलाईआ। किसे दी रहण ना देवे कोई मुखत्यारी, मुखतारनामे सभ दे लए कढ्ढाईआ। सभ दी ला के इक्क नाल यारी, यराना पिछला दए चुकाईआ। उह वेखणा धुरदरबारी, दरगाह साची दा मालक अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा उहला आप उठाईआ।

सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म सति सच संदेशा, सन्धया सरघी वंड ना कोई वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मातलोक दा वेखो देसा, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। तेई अवतार आपणा पूरा करो लेखा, बाकी नज़र कोई ना आईआ। पैगम्बर झगढ़ा छड्डो शेखा, मुला रो रो मारन धाईआ। दस गुरू निगाह मारो तुहाड्डा साचा दिसे कोई ना बेटा, गुरमुख गोबिन्द विच्च ना कोई समाईआ। कौल इकरार कर लउ चेता, चेतन्न दिआं कराईआ। अन्तम सभ दा होणा इक्को नेता, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दी सभ ने देणी भेटा, भजन बन्दगी विच्च सीस निवाईआ। उह दो जहानां बणे खेवट खेटा, बेपरवाह दया कमाईआ। लेखा जाणे मूंड मुंडाए धारी केसा, दस दस्मेशा फेरा पाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन ना कोई रखाईआ। उह कर अगम्मी वेसा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो आपणी करो हां, सच दिआं जणाईआ। सारे कहण प्रभू इक्को पिता ते इक्को मां, दूजा नज़र कोई ना आईआ। साडी दरोही असीं वंडां आए पा, पारब्रह्म ब्रह्म रंग रंगाईआ। किसे ने राम किसे ने किहा कृष्न कोई कहि के आया खुदा, सतिनाम वाहिगुरू सिफ्तां विच्च सालाहीआ। किसे ने शरअ सूर बणाई किसे बणाई गाँ, पशूआं उत्ते धर्म आए टिकाईआ। जे सारयां दस्सया प्रभू दा इक्को कलमा ते इक्को नां, नर नरायण इक्क अखवाईआ। फिर क्यों वंड रखाई काया साढे तिन्न हत्थ गराँ, परदा सच ना कोई खुल्हाईआ। मुहब्बत विच्च पकड़ी किसे ना बांह, उल्फ्त विच्च ना कोई चतुराईआ। सांझा कीता ना किसे निआं, मज़्हबां वाली आपणी हद्द बणाईआ। एसे कारन आए लिखा, भविख्तां विच्च जणाईआ। जिस वेले सारी दुनियां होई बेवफ़ा, वफ़ादार रहण कोई ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निहकलंका कल कलकी अमाम अमामा जावे आ, धुर दा मालक फेरा पाईआ। सभ दा लहणा देणा दए चुका, चुकन्ना करे लोकाईआ। सो वक्त पहुंचिआ आ, वेला दए गवाहीआ। पुरख अबिनाशी दया रिहा कमा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सच दरबारा रिहा लगा, सम्बल सोभा आपे पाईआ। भगत भगवान रिहा वड्डिआ, वड्डा छोटा ना कोई अखवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो इक्ठे होणा आ, आपणा पन्ध चुकाईआ। दीन मज़्हब दा अग्गे लग्गणा नहीं किसे दा दाअ, दाअवत वाले खाणे सभ दे बन्द कराईआ। मेरे नां दी जेहड़ी मनुक्खां विच्च लाई वबा, बीमारी अंदरों देणी कढ्ढाईआ। सभ दा सांझा बण के इक्क खुदा, परमात्म आत्म

जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहण सानूं धुर दा होवे चाअ, चाओ घनेरा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साची आस पुचाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव कहे, खुशीआं नाल आवांगे । तेई अवतार कहण साडी पत रहे, पतिपरमेशवर सीस निवावांगे। पैगम्बर कहण जो सभ नूं दात दए, दर उस दे अलख जगावांगे। गुर दस कहण जो हर घट अंदर रहे, सो स्वामी वेख वखावांगे। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्टी करदा लै, उत्पत विच्च उस दी सेव कमावांगे। जो भगतां आया गृह, घर उस दे डेरा लावांगे । जो प्यार मुहब्बत दी वहावे नै, रस अमृत वेख वखावांगे। जिस दा जुग जुग मन्नदे आए भय, भजन उसे दा गीत सुणावांगे। जिस दा मन्दर कदे ना ढहे, दवारा इक्को इक्क वड्डिआवांगे। जिथ्थे तख्त निवासी तख्त बहे, सो सिँघासण वेख खुशी उपजावांगे। हँकारी रहे कोई ना मैं, ममता मोह सर्ब तजावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगे।

राम कहे सभ दा मालक सभ किछ सभ नूं दए, देवत सुर वड्डिआवांगे। मैं चौहन्दा प्रभू दे चरनां विच्च हरि संगत मेरी आशा कारन सीता राम दी जै कहै, तिन्न वार सुणाईआ । कृष्न किहा मेरा काहन है, काहन काहन इक्क अखवाईआ। जिस दे नाल राधा रहे, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

कृष्न कहे मेरा कृष्न काहन प्यारा, प्रेमी इक्क अखवाईआ । जिस नूं कहण चौवीआं अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सभ दी पावे सारा, महांसारथी वेस वटाईआ। मैं वी करदा रिहा इंतज़ारा, ध्यान ध्यान विच्च लगाईआ। त्रैलोकी तों बाहरा, जिस दा खेल न्यारा, जुग चौकड़ी समझ किसे ना पाईआ। मैं चौहन्दा उहदिआं कदमां विच्च राधा कृष्न दा लग्गे नाअरा, हरि संगत दो वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच परदा दए उठाईआ।

हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहे साडा इस्लामीआ टब्बर, दीन दुनी कायनात नज़री आईआ । असीं सन्तोख कीता सबर, शुकराने विच्च दुहाईआ। दरोही दरोही दरोही वास्ताा पाया विच्च कबर, मकबरे देण दुहाईआ। जिस वेले आया अगम्मी बब्बर, शेर शेरा रूप वटाईआ । सभ दी करे कदर, कुदरत दा मालक नूर खुदाईआ । सदी चौधवीं वेखे अदल, इन्साफ़ आपणा इक्क जणाईआ। दीन दुनी दा समाज देवे बदल, बदला रहे ना राईआ। सभ दा बण के सांझा सज्जण, मित्र इक्क अखवाईआ। नाम कलमा जणा के भजन, बन्दगी इक्क दृढ़ाईआ । चार वरन तोल के वजन, कंडा आपणे हत्थ उठाईआ । साडा सारयां दा सांझा कर के वतन, बेवतनां लए मिलाईआ। वखा अगम्मी पत्तन, बेड़े लए चढ़ाईआ। सभ दी लज्जया आवे रक्खण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जिस नूं अवतार पैगम्बर

सारे तक्कण, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। असीं चौहन्दे जन भगत सुहेले सूफ़ी फ़कीर नाअरा लावण अल्ला हू अकबर, उच्ची इक्क वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ ।

नानक निरगुण कहे मैं वेखणा उह अमाम, जो अमलां तों रहित नज़री आईआ। जिस दे अन्तर दिसिआ सतिनाम, कलमा कलमे विच्च बदलाईआ। संदेशा दे पैग़ाम, कीती शब्द पढ़ाईआ। निरगुण नूर दस्स पहचान, परदा दिता उठाईआ। सांझा दे ज्ञान, सिखिआ इक्क वखाईआ। बख्श के चरन ध्यान, मेला लिआ मिलाईआ। एका जोत कर प्रधान, दस जामे लए भुगताईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, शब्दी डंक सुणाईआ। दे के धुर फ़रमाण, भेव अभेदा इक्क जणाईआ। कल कलकी होवे प्रधान, निहकलंका नाउँ धराईआ। सम्बल वसे आण, सिँघासण आसण इक्क रखाईआ। सभ दा करे कल्याण, जो सरन लग्गे सरनाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ तुफ़ान, सतिजुग सच लए प्रगटाईआ। नानक कहे मैं चौहन्दा चार वेरां हरि संगत बोलणा सतिनाम, सति सति विच्च समाईआ। गोबिन्द कहे मेरा फतिह जैकारा सुणो विच्च जहान, चार वरन वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारा इक्क वखाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण, प्रभ सच दरबार लगावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे बिन नैण, जोती जाता डगमगावेगा। जिस दे कोल नाम रसैण, बिन रसना जिह्वा सर्ब पढ़ावेगा। जिस दा नूर ऐन दा ऐन, जलवा इक्को इक्क वखावेगा। उह सभ दा लेखा आवे लैण, लहणा सभ दा मूल चुकावेगा। नाता तोड़ भाई भैण, जन भगतां आप प्रगटावेगा। कूड़ी क्रिया मूल ना वहण, माया ममता मोह मिटावेगा। भगत दवारे साचे बहिण, भगवन आसण इक्क सुहावेगा । धुर दा भाणा सदा सैहण, सिर अग्गे ना कोई उठावेगा। जो झगढ़ा पिआ मत जैन, पट्टी सभ दा मुख खुल्ह़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगावेगा।

गुर अवतार पैगम्बर कहण असीं सुणना नाम अनादी, अनहद धुन शनवाईआ। जन भगतां वेख अबादी, दर सोहणे सोभा पाईआ। भगत भगवान दी तक्कणी शादी, घर मेला सैहज सुभाईआ। सभ ने इक्क दे बणना समाजी, समां शहादत दए गवाहीआ। बिनां प्रभू तों वड्डिआई काहदी, तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। वस्त मिले किसे ना हाजी, हुजरयां सीस ना कोई निवाईआ। बिन धुर दे नाम तों सारे होए दाग़ी, दग़ा करे लोकाईआ । सोई सुरती किसे ना जागी, नेत्र अक्ख ना कोई खुल्ह़ाईआ। खेल वेखणा कलिजुग अन्तम बाज़ी, बाजां वाला दए वखाईआ। जन भगतो गुर अवतार पैगम्बर कहण साडे वास्ते सभ ने इक्क इक्क वस्त लिऔणी घरों भाजी, लाची दाणा जेब टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच मेला आप मिलाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण जन भगतो साडा पकवान पकायो पक्का, पक्की तर्ह़ां

जणाईआ । चार वरन बणायो सका, द्वैत अंदर रहे ना राईआ। झगढ़ा मेटणा बूरा कक्का, काले कोझे कमले गल लगाईआ। दूसर रहे कोई ना वक्खरा, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ । सभ कुछ वेखयो नाल अक्खां, अक्खी देण दृढ़ाईआ। जिहड़ा साढे तिन्न हत्थ रक्खया रस्सा, पंज प्यारयां हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस ने मलेछां उठौणी सफा, सफा आपणी दए बदलाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण चार थाल होण परोसे, माझा मालवा जम्मू दुआबा वाले लिआईआ। पाणी दे ग्लास रक्खणे नाल कोसे, ठंडा जल ना कोई भराईआ । पंजां तों वध्ध खाणे होण ना बहुते, सच दईए दृढ़ाईआ। असीं होणा नहीं कोई मोटे, तन रहण कोई ना पाईआ। अग्गे तों गुरमुख जीउँदा देवे कोई ना मोछे, पीरां भेट ना कोई चढ़ाईआ। पिछली रीती बिनां प्रभू तों कोई ना रोके, रुकमणी कृष्न गया समझाईआ। जिस वेले गनका ज्ञान दिता सी तोते, शब्दी शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण खाणा होवे विच्च पंज बरतन, पंजां दिआं जणाईआ। प्रभ ने साडी पूरी करनी शर्तन, जो शरअ विच्च समझाईआ। मालक हो के अर्शन, फर्शन सोभा पाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढा सांझा करना मिलन वरतन, ऊँच नीच ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण सच दरबारा वेख वखावांगे । जो हुक्म दस्से नर निरँकार, सो सुण के खुशी मनावांगे। जो खाणा लै के आउण जन भगत नाल प्यार, सो प्रेम विच्च मिल खावांगे। एह सभ दी साची कार, सच करनी कार कमावांगे। अगला मेल अगम्म अपार, प्रभ अग्गे सीस निवावांगे। साडा रहे ना कोई अख्त्यार, तेरे हुक्मे अंदर सेव कमावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दे पूरे करे कौल इकरार, इकरारनामे गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभ दे अग्गे टिकावांगे।

(१६ जेठ शै सं ५ जमांदार किशन सिँघ)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊